1.5. मध्यपाषाण-काल *(The Mesolithic Age : Middle Stone Age)*

मध्यपाषाण-युग संक्रांति काल था। बहुत दिनों तक विद्वान मध्यपाषाण-युग के अस्तित्व से इनकार करते थे; परंतु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फ्रांस के मॉस द अजिल (Mas d' Azil) नामक स्थान से कुछ ऐसे उपकरण प्रकाश में आए, जिन्होंने इस धारणा की पुष्टि की कि पुरापाषाण-युग और नवपाषाण-युग के मध्य अंतराल था। वस्तुतः, यह काल नवपाषाण-युग (Neolithic Age) का अग्रगामी था। इसी युग में वैसे तत्त्वों का विकास हुआ, जिन्होंने नवपाषाण-युग में मानव के सामाजिक-आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया। भारत में अबसे करीब 8,000 वर्ष पूर्व, हिमयुग के समाप्त होने और नूतन काल (Holocene Age) के आरंभ होने के साथ ही मध्यपाषाणकालीन संस्कृति का उदय हुआ। जलवायवीय परिवर्तनों ने इस संस्कृति के विकास को प्रभावित किया। इस समय बर्फ की जगह घास से भरे मैदान एवं जंगल उगने आरंभ हो गए, पुराने मौसमी जलस्रोत सूख गए, नए प्रकार की वनस्पति एवं जानवरों का प्रादुर्भाव हुआ। ठंड में रहनेवाले विशालकाय जानवरों (मैमथ, रेनडियर इत्यादि) की जगह घास खाकर जीवित रहनेवाले छोटे जानवर, खरगोश, हिरण, बकरी आदि पैदा हुए। छोटे पशुओं के आखेट के लिए छोटे हथियारों की आवश्यकता पड़ी। अतः, मानव ने अब **लघु पाषाणोपकरण** (Microliths) बनाना आरंभ किया। छोटे होते हुए भी नए हथियार ज्यादा उपयोगी एवं सांघातिक शक्ति रखते थे। इनका विकास उच्च-पूर्वपाषाणिक ब्लेड परंपरा से हुआ। इन हथियारों को व्यवहार में लाने के लिए इन्हें लकड़ी के हत्थों या हड्डी के हत्थों में नियत किया गया। लघु पाषाणोपकरण दो प्रकार के हैं—अज्यामितिक लघु पाषाणोपकरण तथा ज्यामितिक लघु पाषाणोपकरण। इसी समय प्रक्षेपास्त्र-तकनीक (तीर-धनुष) का भी विकास हुआ। इस समय के हथियारों में प्रमुख थे—इकधार फलक (backed blade), बेधनी (points), अर्द्धचंद्राकार (lunate) तथा समलम्ब (trapeze)। भारत में अनेक स्थलों से इस संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। कुछ प्रमुख मध्यपाषाणकालीन स्थल निम्नलिखित हैं—वीरभानपुर (पश्चिम बंगाल), लंघनाज (गुजरात), टेरी समूह (तमिलनाडु), आदमगढ़ (मध्यप्रदेश), बागोर (राजस्थान), मोरहना पहाड़, सराय नाहर राय, महादाहा (उत्तरप्रदेश) इत्यादि।

Scanned with CamScanner

मध्यपाषाणकालीन संस्कृति में अनेक नए तत्त्व देखने को मिलते हैं। जनसंख्या में वृद्धि और आखेट की सुगमता से मनुष्य अब छोटी-छोटी टोलियों में रहने लगा। स्थायी निवास की परंपरा निकली, पशुपालन एवं कृषि की शुरुआत हुई और मिट्टी के बरतन भी बनने लगे। बागोर से शवों को सुनियोजित ढंग से दफ़नाने की विधि का पता चलता है। सराय नाहर राय और महादाहा से स्थायी झोपड़ियाँ बनाकर रहने का अंदाजा लगा है। सराय नाहर राय से मानवीय आक्रमण या युद्ध का भी प्रमाण मिलता है। यह युद्ध संभवतः व्यक्तिगत संपत्ति के कारण हुआ। विंध्याचल की गुफाओं और शैलाश्रयों से शिकार, युद्ध एवं नृत्य के चित्र मिले हैं। भोजन पकाने के लिए चूल्हा एवं मिट्टी के बरतन बनाए जाने लगे। लंघनाज से हाथ द्वारा बनाए गए मिट्टी के बरतन मिले हैं। इस प्रकार, इसी युग में पशुपालन एवं आरंभिक कृषि का विकास हुआ तथा स्थायी आवास बनाए जाने लगे। मध्यपाषाण-युग भारत में करीब 4000 वर्ष तक बना रहा।

Scanned with CamScanner